ये अव्यक्त इशारे

अपवित्रता के बीज को भी समाप्त कर सम्पूर्ण स्वच्छ (पवित्र) बनो

29-08-2026

सम्पूर्ण सत्यता भी पवित्रता के आधार पर होती है। पवित्रता नहीं तो सदा सत्यता रह नहीं सकती है। सिर्फ काम विकार अपवित्रता नहीं है, लेकिन उसके और भी साथी हैं। तो महान् पवित्र अर्थात् अपवित्रता का नामनिशान न हो।

Finish the seed of impurity and become completely clean (pure).

Complete truth is based on purity. If there is no purity, there cannot be constant truth. The vice of lust is not the only impurity, because it also has other companions. So, to be really pure means that there is no name or trace of impurity.